मालवा के ऐतिहासिक नगरों का सांस्कृति उत्थान तथा पतन

Mubeen Khan
Nitin Dwivedi
Senior Research Fellow
M.G.C.G.V.V. Chitrakoot, Satna (M.P.)

ABSTRACT

मध्य प्रदेश के नगरों का पुरातत्व, खासकर ईसा की तीसरी और उसके बाद की शताब्दियों में, प्रायः सिंधु–गांगेय मैदान के पुरातत्व जैसा है। इन क्षेत्रों में हड़प्पाई नगरों के अवसान के पश्चात् लगभग ईसा पूर्व तीसरी अथवा दूसरी शताब्दी में फिर से शहरों का उदय हुआ, लेकिन ईसा की तीसरी शताब्दी के बाद प्रायः वे नष्ट और उजाड़ हो गये।

Keyword :- मालवा, कयथा रूनिजा

मंदसौर जिले में स्थित अवरा

मध्य प्रदेश के मालवा क्षेत्र के मंदसौर जिले में स्थित अवरा में संभवतः ईसा पूर्व चौथी शताब्दी में ऐतिहासिक काल आरम्भ होता है। मौर्योत्तर युग में यहाँ शहरीकरण के स्पष्ट चिन्ह मिलते हैं। ऊपरी परत से उपलब्ध, हाथीदांत की बनी छोटी सी मातृदेवी की प्रतिमा और लोहे की वस्तुयें उत्तरी काली पालिशदार मृद्भाण्ड के टुकड़े के साथ मिली। मिट्टी का बना आवासीय मकान भी मिलता है। दो छल्लेदार कूप भी मिले जिनमें से एक गंदे पानी के निकास के लिए मृण्पात्रों की बनी नली से जुड़ा था। लोहे के उपकरणों में छेनी और हंसिया शामिल थीं। ताँबे का सातवाहन सिक्का और उसी का आहत सिक्का पाया गया है। हाथीदाँत के जले हुए मोहरछापे ईसापूर्व तीसरी शताब्दी की बतलाई गई लिपि है। पर आवासीय परतों से सातवाहन संस्कृति का संबंध होने के कारण यह बाद के समय की लगती है। इन्हीं परतों से अन्न रखने वाला मर्तबान, छोटे–छोटे घड़े और मृण्मय वस्तुयें निकली हैं।

उज्जैन जिलान्तर्गत कयथा

मध्य प्रदेश में उज्जैन जिलान्तर्गत कयथा उज्जैन से मास्की जाने वाली सड़क के किनारे उज्जैन से लगभग चौबीस किलोमीटर पूरब में स्थित है। यह अपनी ताम्र–पाषाण संस्कृति के लिए प्रसिद्ध है जिसके अंत होने पर लगभग सात

शताब्दियों तक आबादी नहीं रही। उसके बाद जो आबादी बसी वह गुप्तकाल तक बनी रही। ऐतिहासिक काल का आरम्भ हाथीदाँत की बनी मातृदेवी, कीमती पत्थरों, मृण्मय प्रतिमाओं, लोहे के उपकरणों और उत्तरी काली पालिशदार मृदभाण्ड से हुआ। ठेठ शुंगकालीन मृण्मूर्तियाँ और ताँबे के ढलवे सिक्के बाद में मिले। शुंग–कुषाण–गुप्तकाल (लगभग 200 ई0 से प्रायः 600 ई0) में मिट्टी के बने डिस्क, दीप, मन्नती तालाब, अंगमर्दक के अतिरिक्त कुठाली, चक्कियाँ, सान चढ़ाने वाले पत्थर इत्यादि पाये जाते हैं। ईंट से बना एक ढाँचा मिला है, जिनमें अनेक कमरे, दीवारें और एक चबूतरा है। यह संभवतः कुषाणकालीन है। इसमें जल–निकास की व्यवस्था से युक्त स्नानगृह भी दिखता है।

स्पष्टतः इस स्थल के पड़ोस की ऊपरी सतह पर पाई गई छिटपुट पुरावस्तुओं से यह साबित नहीं होता कि इसकी आबादी आरम्भिक मध्य युग तक चलती रही। गुप्तकालीन अवशेष भी घटिया ही हैं। व्यावहारिक दृष्टि से यह स्थल गुप्तोत्तरकाल में वीरान हो चुका था।

उज्जैन जिलांतर्गत डंगवाड

उज्जैन जिलांतर्गत और चंबल नदी के किनारे स्थित डंगवाडा शुंग–कुषाणकाल में महत्वपूर्ण हो उठा है। उस समय वहाँ मंदिर के ढाँचे का समूह मिलता है। चाँदी के लेप चढ़ी हाथीदाँत की बनी चूड़ियाँ, छोटा स्वर्ण–पात्र, चीनी मिट्टी के बने घड़े का अलंकृत हत्था, कम कीमती पत्थर और बहुसंख्य आहत सिक्के जैसी अनेक वस्तुओं से शहरी स्वरूप का संकेत मिलता है। शिव मंदिर और यज्ञ–स्थल के अतिरिक्त उज्जयिनी सिक्के, तांबे के ढलवे सिक्के और अभिलिखित मोहरें मौर्योत्तरकाल में पाई जाती हैं। क्षत्रपों और गुप्तों के युग में कुछ अभिलिखित मोहरें, मृण्मय सांचा, ढांचे के अवशेष और क्षत्रपों के सिक्के मिलते हैं।

गुप्त क्षत्रपयुग के फौरन बाद के काल में स्पष्टतः पतन आरम्भ होता है। इस काल से मिट्टी की बनी मात्र कुछ धार्मिक मोहरें और कुछ धार्मिक प्रतिमायें मिलती हैं। इसके बाद वहाँ अंतराल मालूम पड़ता है। चूँकि बारीक लाल मृदभांड प्रायः छठी शताब्दी के बाद बरकरार नहीं रहा, अतएव डंगवाडा में परमारों के आगमन के पहले आबादी में अंतराल का संकेत मिलता है।

उज्जैन जिलान्तर्गत रूनिजा

उज्जैन जिलान्तर्गत रूनिजा से लोहा, ढलवे और आहत सिक्के, शीशे की चूड़ी और हाथीदाँत के मनके प्राप्त हुए जो शुंगों और सातवाहनों के समय से पहले माने जाते हैं। लेकिन इस चरण के बारे में कोई विशेष जानकारी नहीं है। क्षत्रप

शासक रूद्रसेन का सिक्का और कुछ क्षत्रप–कुषाणकालीन चित्रित मृदभांड प्राप्त हुए हैं। हाथीदाँत और शंख की चूड़ियाँ और कम कीमती पत्थर के मनके भी मिले हैं। मिट्टी की मूर्तियाँ, सोने के सिक्के और कम कीमती पत्थर के मनके गुप्तकाल का प्रतिनिधित्व करते हैं। स्पष्टतः गुप्तकाल के बाद यह स्थल उजड़ गया।

पुरातात्विक रिपोर्टों से मध्य और पूर्वी मध्य प्रदेश में अधिक संख्या में प्राचीन शहरी आबादियों के होने का पता नहीं चलता है। मध्य प्रदेश में लगभग 300 ई0पू0 में नगरीकरण शुरू हुआ, सातवाहनों तथा शक–क्षत्रपों के अधीन समृद्ध हुआ। चौथी शताब्दी के अन्त तक शहरी जीवन प्रायः समाप्त हो चुका था। यद्यपि उज्जैन और मन्दसौर जैसे जिले बरकरार रहे।

सन्दर्भ

1. वाइ0डी0 शर्मा, 'रिमेंस ऑव अर्ली हिस्टॉरिकल सिटीज़, आर्कियोलॉजिकल रिमेंस, मॉन्यूमेंट्स एंड म्यूजियम्स, भाग प्रथम, पू0–73
2. जेड0 डी0 अंसारी और एम0के0 धवलिकर, एक्सकेवेशंस ऐट कयथा, पृ0 8।
3. वही, पू0 14–15
4. आइ ए आर, 1964–65, पू0–19
5. आइ ए आर, 1956–57, पृ0 24, 27
6. आर0एन0 मेहता और एस0एन0 चौधरी, एक्सकेवेशन ऐट धतवा, पृ0–9